अध्याय द्वितीय

साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

प्रत्येक अनुसंधान के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्वपूर्ण सोपान है। संबंधित साहित्य अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में अनुसंधान को उचित दिशा नहीं मिलती। जब तक शोधकर्ता को ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना शोध कार्य हो चुका है किस प्रविधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है। साहित्य का पुनरावलोकन चाहे किसी भी क्षेत्र का हो शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है। क्योंकि यह समस्या की पूरी तस्वीर उभारने में मदद करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

अनुसंधान कर्ता जब अनुसंधान के क्षेत्र में कदम रखता है तब उसके लिए यह क्षेत्र नया रहता है। उसी समय नवीन क्षेत्र की कार्य पद्धति को जानने एवं समझने के लिए उस क्षेत्र के पूर्ण हो चुके कार्य का अवलोकन करना जरूरी बनता है क्योंकि उससे अनुसंधान कर्ता को लाभ होता है और अपना कार्य आसानी से पूरा कर सकता है।

इसीलिए अनुसंधानकर्ता के लिए साहित्य का पुनरावलोकन अति आवश्यक सोपान है।

साहित्य के पुनरावलोकन की आवश्यकता

1) शोध कार्य की योजना बनाने में प्रारंभिक पदों में से एक रूचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किये गये शोध कार्यों की समीक्षा करता है, इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा का संकेत देता है।

2) प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किये गये अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो। वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यक समझा जाता है।

3) यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है, शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिए समानता प्राप्त करता है। शोधकर्ता साहित्य के पुनरावलोकन के आधार पर अपनी परिकल्पनायें बनाता है। यह अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है। अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन के उद्देश्य

1) यह सिद्धान्त विचार व्याख्यायें अथवा परिकल्पनायें प्रदान करता है जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

2) यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पनायें बना सकता है।

3) यह समस्या के लिए उचित विधि-प्रक्रिया, तथ्यों के साधन और सांख्यिकी तकनीक का सुझाव देता है।

4) यह परिणामों के विश्लेषण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है। सम्बन्धित अध्ययनों से प्राप्त किये गये निष्कर्षों की

तुलना की जा सकती है और यह समस्या के निष्कर्षों के लिए उपयोगी हो सकता है।

5) यह शोध कार्य किये गये क्षेत्र में शोधकर्ता की निपुणता और सामान्य ज्ञान को विकसित करने में सहायक होता है।

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

1. यह समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है।
2. इससे अनावश्यक पुनरावृत्ति होने से बचत होती है।
3. अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना प्राप्त होती है।
4. पूर्व अध्ययनों में प्रयुक्त आँकडे वर्तमान अध्ययन में प्रयुक्त हो सकते हैं।
5. यह अनुसंधानकर्ता के समय की बचत करता है।
6. इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
7. समस्या के सीमांकन में सहायता मिलती है।
8. यह समस्या के चुनाव, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।
9. यह अनुसंधानकर्ता में आत्मविश्वास बढाता है।
10. आँकडो का विश्लेषण करने में शोधकर्ता की मदद करता है।

2.2 संबंधित शोध कार्य का पुनरावलोकन

पिल्लेवार मनिष बाबुराव (2005-06) दक्षिण नागपुर क्षेत्र के कुल 11 प्राथमिक शालाओं के 50 शिक्षक-शिक्षिकाओं की शैक्षिक परिपक्वता तथा कार्यो से उत्पन्न तनाव का अध्ययन किया था।

उन्होंने प्राथमिक शिक्षक–शिक्षिकायें तथा शासकीय–अशासकीय चरों को ध्यान में रखकर शैक्षिक परिपक्वता की जाँच की थी। जिसमें लिंग में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि शासकीय, अशासकीय में सार्थक अंतर पाया गया।

जोशी ऋचा (2005) ने गुजरात राज्य के सुरेन्द्रनगर जिले के तीन तहसीलों की 15 प्राथमिक विद्यालयों के कुल–100 अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवम् व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया था। शोधकर्ता ऋचा ने यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 100 शिक्षकों का चयन किया और अध्ययन के उद्देश्य अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध, सकारात्मक अभिवृत्ति एवं व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध, नकारात्मक अभिवृत्ति तथा व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध तथा अभिवृत्ति और व्यवसायिक संतुष्टि को लिंग के आधार पर जांच करना था। जिसके अंतर्गत अभिवृत्ति एवं व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध देखने को मिला जबकि लिंग के आधार पर अंतर नहीं पाया गया।

नामदेव पुष्पा (2009) ने उर्पयुक्त अनुसंधान के लिए भोपाल शहर को 100 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में 100 शिक्षकों का यादृच्छिक वि.वि. द्वारा चयन किया। जिसमें व्यवसायिक पसंदगी– व्यवसायिक समायोजन, व्यवसायिक पसंदगी– व्यवसायिक संतुष्टि और व्यवसायिक समायोजन– व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना था एवं उर्पयुक्त तीनों चरों को लिंग के आधार पर भी जांच करना था।

रेड्डी, बालकृष्ण पी. (1989), ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य व्यवसाय संतुष्टि स्तर अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना, लिंग, वैवाहिक स्तर, शैक्षिक योग्यता, कुटुंब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्व कारक के आधार पर व्यवसाय के संबंधों का अध्ययन करना था। इसलिए बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से 300 शिक्षकों का चयन किया गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु

व्यवसाय संतोष सूची, शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची, केटल की 16 पी. एफ. प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक संबंध होता है। व्यवसाय के विविध कारको का अभ्यास करने से पता चलता है कि सात कारको के प्रति शिक्षकों में व्यवसाय संतुष्टि देखने को मिलती है, जबकि नौ कारको के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है। व्यक्तित्व के चार कारको और व्यवसाय सूची को जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उसमें सार्थक अंतर पाया गया।

सक्सेना ज्योत्सना (1995) ने शिक्षकों के समायोजन व्यवसायिक संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति के आंतर संबंधों का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य है प्रभावशाली शिक्षक पहचानना तथा शिक्षक का प्रभाव एवं समायोजन में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति इनका संबंध देखना था। शोध कार्य के लिए ग्रामीण क्षेत्र की 33, शहरी क्षेत्र की 22, माध्यमिक शालाओं में से 545 शिक्षकों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चुना गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु कटटी एवं वर्नर द्वारा निर्मित शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया था। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध गुणांक एवं 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष में पाया गया कि प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन और अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि है। तथा शिक्षण अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। शहरी अप्रशिक्षत शिक्षकों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों से अधिक अच्छा है। कम पदवी वाले शिक्षक का समायोजन पदवी–धारक शिक्षकों से अधिक अच्छा है, ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावशाली शिक्षक अपने व्यवसाय में शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट है।

शर्मा ब्रजेश कुमार (2001) ने व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य संतुष्टि को शासकीय-अशासकीय, लिंग एवं अनुभव के आधार पर जाँच करना था। जिसमें न्यादर्श में भोपाल शहर की 39 प्राथमिक शालाओं के 184 शिक्षकों को लिया गया। प्रदत्तों केसंकलन के समय भोपाल शहर को पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया-जैसे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं मध्य और इनमें से शासकीय, अशासकीय शालाओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। शिक्षकों का भी यादृच्छिक विधि द्वारा वृत्ति क्षेत्रों में से चयन किया गया। उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पनाओं ाक परीक्षण किया गया तो उसमें निष्कर्ष निकला कि 40 साल से अधिक वय वाले शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि 40 साल से कम वय वाले शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि से कम है।

वणकर हरेशकुमार (2009) ने प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनके अध्ययन- अध्यापन पर प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें उद्देश्य क्षेत्र, लिंग, शिक्षकों की योग्यता के आधार पर अध्ययन करना था। उन्होंने अध्ययन हेतु गुजरात के सावारकांठा जिले को ही लिया था। 24 प्राथमिक विद्यालयों में से 120 शिक्षकों की योग्यता इन चरों के अंतर्गत कोई अंतर नहीं पाया गया।

सान्धु जे.एस. (1970), चंडीगढ़ पंजाब विश्वविद्यालय के एक-दूसरे छात्र ने उत्तर भारत की चार महाविद्यालयों के अध्यापको की अकादमिक स्वतंत्रता का अध्ययन, अध्ययन व्यावसायिक संतुष्टि के संदर्भ में किया है। इस अध्ययन में विश्वविद्यालय के 60 अध्यापकों का न्यादर्श हेतु चयन किया गया था, जिसमें 8 प्रोफेसरों,12 रीडर, 40 लेक्चरर थे। अध्ययन के लिए विज्ञान एवं कला के अध्यापकों की समान संख्या ली गयी थी। न्यादर्श के द्वारा हर विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभागों के अध्यापक चूने गये थे। 100 प्रश्न वाले प्रश्नावली प्रपत्र को प्रयोग में लाया गया था। जिसमें से 50 प्रश्न अकादमिक स्वतंत्रता से संबंधित थे एवं दूसरे 50 प्रश्न व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित थे। इन दोनों कारकों में सह संबंध मालूम किया गया। जिसके

अनुसार इन विभिन्न स्तरों के अध्यापकों में स्वीकारात्मक एवं अधीपूर्ण संबंध पाया गया जिसका विवरण इस प्रकार है:-

1 प्रोफेसर,	2. रीडर,	3. लेक्चरर
0.65	0.47	0.35

सभी प्रोफेसर ने यह प्रतिवेदन किया कि वे अकादमिक स्वतंत्रताओं से विशेष संतुष्ट है। 37.5 प्रतिशत प्रोफेसरों में 75 प्रतिशत के उपरांत संतोष था। अनुसंधान में यह पाया गया कि प्रोफेसरों में रीडर एवं प्रवक्ताओं की अपेक्षा एकेडमिक स्वतंत्रता की संतुष्टि अधिक है ।

राव अब्दुल (2008), ने प्राथमिक शिक्षकों के मानसिक स्वस्थता और व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य उम्र शैक्षिक योग्यता, माध्यम, जाति एवं शैक्षिक अनुभव के आधार पर जाँच करना था। इस अध्ययन के लिए 60 प्राथमिक शालाओं में से 60 शिक्षकों को लिया गया। जिसमें उर्पयुक्त चरो में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

गोयल, जे.सी. (1980) ने अभिवृत्ति व्यावसायिक संतुष्टि, समायोजन, व्यावसायिक रूचि के अंतर संबंधो का अध्ययन किया। जिसमें वय, जाति, शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव के आधार पर परिकल्पनाओं को जाँच करना था। जिसमें अंतर नहीं पाया गया। और उर्पयुक्त चार चरों के बीच अंतर संबंधों की जाँच करना था। जिसमें समायोजन एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध पाया गया।

इस प्रकार अनुसंधानकर्ता ने अपने अध्ययन को पूर्ण करने में उर्पयुक्त पूर्व हो चुके अनुसंधान कार्य का पुनरावलोकन किया और उर्पयुक्त अनुसंधान कार्य के अवलोकन से शोधकर्ता को न्यादर्श विधि, अध्ययन विधि, प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने में सहायता प्राप्त हुई। तथा अनुसंधान की आवृत्ति एक जैसी न हो जाये ये भी ध्यान में रहता है। अनुसंधान में परिकल्पना, उद्देश्य आदि के निर्माण में भी सहायता प्राप्त होती है।

अतः इन सभी बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन की संपूर्ति हेतु शोधकर्ता ने उर्पयुक्त अध्ययन कार्यो का पुनरावलोकन किया।